[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

नारी आंदोलनों के समाज पर व्यापक प्रभाव

अनुराधा गांधी

यद्य प बड़ी संख्या में राजनीतिक व सामाजिक गति व धयों में औरतों की वास्त वक भागीदारी 1920 के बाद ही स्वतंत्राता आंदोलन, ट्रेड यूनियन आंदोलन, जाति वरोधी आंदोलन के रूप में शुरू हुई, ले कन व भन्न प्रकार के नारी उत्पीड़न के खलाफ नारी मुक्ति संघर्षों की शुरुआत इसके पहले ही शुरु हो चुकी थी। ब्रिटिश उपनिवे शक भारत में फ्रांस की क्रान्ति, पूँजीवाद का क्र मक वकास, एक नये पढ़े लखे प्रशासनिक व व्यापारी वर्ग के उदय जैसे कारणों ने उन सुधार आंदोलनों के लए एक आधार तैयार कया , जो देश के अलग-अलग हिस्सों में उभरे। उन्नीसवीं सदी के अंत तक उन आंदोलनों ने कई रूप धारण कए। 1947 के पहले के नारी आंदोलनों की प्रवृत्तियों को इस प्रकार रखा जा सकता हैः

1. आंर भक सुधारवादी आंदोलनों की उदार जनवादी प्रवृत्तियाँ

2. बाद के सुधारवादी आंदोलनों की हिन्दू पुनरुत्थानवादी प्रवृत्ति

3. जाति- वरोधी आंदोलन की नारीवादी प्रवृत्ति

4. कम्युनिस्ट प्रवृत्ति

उन्नीसवीं सदी के आरं भक सुधारवादी आंदोलनों का उद्देश्य कानूनी व सामाजिक तरीकों से औरत की स्थिति में सुधार लाना था। ले कन ये आंदोलन पुरुषों द्वारा संचा लत थे। इसका एकमात्रा अपवाद पं डता रमाबाई हैं जो शायद अपने समय की एकमात्रा महिला थीं जिन्होंने बिना अपने परिवार की मदद के न केवल शक्षा के लए प्रयत्न कए बल्कि वधवा ववाह व बेसहारा औरतों के रहने के लए आवास गृह भी स्था पत करवाए। आरं भक समाज सुधारकों (बंगाल से राजा राममोहन राय व ईश्वरचन्द्र वद्यासागर , महाराष्ट्र से अगारकर व रानाडे , आन्ध्र से वरसा लंगम) का नारी के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण था। उन्होंने सती प्रथा के खलाफ , वधवा पुन र्ववाह, बाल ववाह के वरूद्ध नारी शक्षा के पक्ष में प्रचार कया। ले कन ये सभी सुधारवादी नेता ब्राम्हण थे और उनका प्रभाव ज्यादातर ऊँची जाति की औरतों की स्थिति पर पड़ा। ले कन इन सुधारकों के अपनाए तरीके निष्क्रिय थे जो हस्ताक्षर अ भयान , जन सभाओं, अंग्रेज सरकार के साथ कानूनी सुधारों के लए गठजोड़ बनाने तक ही सी मत थे। इनको सुधारवादी कानून बनवाने में सफलता भी मली। जैसे 1891 में शादी की उम्र से संबं धत कानून।

रूढ़िवादी ब्राम्हणों ने इन सुधारों का हर कदम पर वरोध कया और उदार सुधारकों को सामाजिक बहिष्कार से लेकर हिंसात्मक प्रताड़नाओं तक का शकार होना पड़ा। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में महाराष्ट्र में इन समाज सुधारकों पर बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में हमले हुए। जिसने उन्हें धर्म वरोधी व राष्ट्र वरोधी करार देते हुए कहा क कोई भी स्वा भमानी भारतीय अपने समाज व धर्म को बदलने के लए वदेशी शासकों की मदद नहीं लेगा। इसके बाद सुधार आंदोलन में ब्राम्हण वर्ग द्वारा तय एक नई प्रवृत्ति ने जन्म लया , वह थी राष्ट्रीयता की भावना और हिन्दू पुनरुत्थान। आरं भक उदार सुधारक चूं क ऊँची जाति व उच्च वर्ग से थे इ सलए वे हिन्दू वचारधारा की जाति प्रथा व पतृसत्तात्मक परम्पराओं का वरोध करने में हिच कचाते थे। परिणामतः पुनरुत्थानवादियों ने उन्हें अपनी चपेट में ले लया। नव पुनरुत्थानवादियों ने खुद को मज़बूत संस्थाओं में संगठित कया। जैसे, दयानन्द सरस्वती का आर्य समाज (1875), ववेकानन्द का रामकृष्ण मशन (1897) और कुछ हद तक एनी बेसेंट की मद्रास हिन्दू एसो सएशन (1904)। यद्य प उन्होंने हिन्दू सुधारकों का वरोध कया फर भी कुछ सुधारों का समर्थन भी बदले रूप में इन लोगों ने कया। उदाहरण के लए पुनरुत्थानवादियों ने बाल वधवा के पुन र्ववाह को तो उ चत ठहराया ले कन बड़ी उम्र की वधवा के ववाह को नहीं। उन्होंने उसी हद तक नारी शक्षा को उ चत ठहराया क वे अच्छी गृहणी सद्ध हो सके।

सुधार आंदोलन में उदार नारीवादी प्रवृत्तियाँ पूर्णतः खत्म न ही हुई बल्कि उन्होंने 1927 में राष्ट्रीय स्तर के एक महिला संगठन ''ऑल इण्डिया वुमेंस कांफ्रेंस के रूप में अपने आपको एकीकृत रूप में जन्म दिया। पहले की क्षेत्रीय संस्थाओं, जैसे ब्रम्हका समाज, आर्य नारी समाज आदि से हटकर थी। इसे चलाने के लए महिलाएँ खुद आगे आईं , नेतृत्व दिया और औरत के अ धकारों के प्रति ज़्यादा क्रान्तिकारी रुझान दिखाया। इन्होंने हिन्दू पर्सनल ला को पूर्णतः बदलने की माँग उठाई। 1943-44 में गांधी की सलाह के वपरीत इस संगठन ने हिन्दू कोड बिल के प्रचार में स क्रय योगदान कया और इसके सदस्य सरकार द्वारा नियुक्त राऊ कमेटी के समक्ष 'टेस्टीमनी' के लए भी पेश हुए। जब क भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इसका बहिष्कार कर रही थी। ले कन वुमेंस कांफ्रंेस की उच्च जातीय , उच्च वर्गीय उदार नारीवादी प्रवृत्ति तब बेनकाब हो गई जब उन्हें रूढ़िवादी हिन्दुओं द्वारा बिल के वरोध का सामना करना पड़ा। कांफ्रेंस की राजनीति का ढंग केवल बंद कमरों की सभाओं और प्रस्ताव पास करने तक सी मत रहा। कभी लोगों को लामबंद करने या अल्पसंख्यकों , नीची जाति की महिलाओं तक पहुँचने की को शश नहीं की गई। पुनरुत्थानवादियों द्वारा स्था पत ढाँचे को गांधी ने थोड़े परिष्कृत रूप में अपनाया जिसने रामराज्य के रूप में आदर्श भारत और भारतीय नारी के आदर्श के रूप में सीता को सामने रखा। यद्य प गांधी ने पति द्वारा पत्नी की अत्य धक अधीनता का वरोध कया ले कन हिन्दू समाज की परम्परागत पारिवारिक संरचना का प्रतिरोध नहीं कया। आज़ादी के संघर्ष के शुरू में गांधी ने पुरुषों को सार्वजनिक वरोध करने का और राजनीतिक संगठन बनाने को प्रेरित कया जब क औरतों को घर में रहकर खादी कातने को प्रेरित कया गया। शुरू में गांधी ने औरतों के सड़कों पर आने के प्रति हिच कचाहट दिखाई। यह तो महिलाओं के सतत प्रयासों का परिणाम था क वे देशभक्तिपूर्ण गीत गाते हुए व प्रचार करते हुए प्रभात फेरियाँ निकालने लगीं और वदेशी कपड़े व वदेशी शराब की बिक्री की दुकानों पर धरना देने लगीं। फर भी महिलाओं का योगदान आंदोलन को मात्रा समर्थन देने व सहायता देने तक ही सी मत रहा। गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन महिलाओं को सार्वजनिक जिंदगी में लाने में कामयाब तो हो सका ले कन उन में से ज्यादातर उच्चवर्गीय या मध्यम वर्गीय हिन्दू महिलाएँ ही थीं। यद्य प इसका प्रभाव समाज के बाकी हिस्सों पर भी पड़ा ले कन गांधी ने भारतीय हिन्दू समाज में औरत की स्थिति में

वास्त वक बदलाव लाने के लए कोई प्रेरणा नहीं दी। इसके ठीक वपरित जाति- वरोधी आंदोलनों और कम्युनिस्टों द्वारा संचा लत आंदोलनों ने नीची जाति की शो षत जनता, मज़दूरों व कसानों को व्यापक स्तर पर लामबंद कया। महाराष्ट्र के ज्योतिबा फुले का आंदोलन , त मलनाडु में पेरियार का आंदोलन , अम्बेडकर का द लत आंदोलन ब्राम्हणवाद व जाति व्यवस्था की पूरी संरचना के साथ-साथ पतृसत्तात्मक व्यवस्था को ललकारने में कामयाब रहा। 1849 में ही फूले ने रूढ़िवादी ब्राम्हणों के जबर्दस्त वरोध के बावजूद अछूत महार व मांग जाति की लड़ कयों के लए स्कूल शुरू कया। फुले की संस्था सत्यशोधक समाज के सदस्यों के लए अपने बेटे व बेटियों दोनों को पढ़ाने की शपथ लेना जरूरी होता था। फुले ने हिन्दू बाम्हण वधवाओं के बच्चों के लए घर बनाए। उन्होंने खुद एक ऐसे बच्चे को गोद लया और वधवाओं पर होने वाले अत्याचारों के खलाफ पूना में नाइयों की हड़ताल भी आयोजित की। फुले ने औरत की गरती हालत पर काफी भाव प्रवण होकर लखा। भाषा के मामले में भी फुले जागरूक थे। उन्होंने हर क्षेत्रा में स्त्राी को बराबर का स्थान देने के लए उ चत शब्द का इस्तेमाल कया।

दशकों बाद त मलनाडु में पेरियार इससे भी आगे बढ़े। उन्होंने मंगलसूत्रा का परित्याग करने की बात की , औरतों और पुरुषों की एक जैसी वर्दी हो, लड़ कयों को लड़कों वाले नाम देने का सुझाव रखा, पुरुषों को घर के कामकाज में मदद देने और बच्चों की देखभाल में बराबर की जिम्मेवारी निभाने को कहा। फुले और पेरियार दोनों ने ब्राम्हण पुजारियों और परम्परागत रीतियों को मानने से इंकार कर जाति-व्यवस्था को ललकारा और इस प्रकार की शादी का सुझाव रखा जिसमें स्त्राी-पुरुष को बराबरी का अ धकार हो। उनकी वचारधारा जनवादी थी। आरं भक सुधार आंदोलनों की उदार नारीवादी नीति से यह आगे बढ़ी। चूँ क उनका नजरिया ऐतिहा सक भौतिकवादी नहीं था, उन्होंने नारी उत्पीड़न व जाति उत्पीड़न का स्रोत सामंती अर्थव्यवस्था में न खोजकर हिन्दू धर्म व संस्कृति में खोजा। यही वजह है क कुछ समाज वज्ञानियों ने इस प्रवृत्ति को सामाजिक नारीवादी प्रवृत्ति कहा है। कम्युनिस्ट पहले थे जिन्होंने औरत के शोषण के प्रश्न पर ऐतिहा सक भौतिकवादी व्याख्या का सहारा लया और उनकी संपूर्ण मुक्ति का मुद्दा उठाया। उन्होंने समाज सुधारकों के मुकाबले गुणात्मक रूप में अलग ढंग से संगठन बनाया। उन्होंने लड़ाकू संघर्षों में कसानों व कामगारों को लामबंद कया। कम्युनिस्टों ने शुरू से ही महिला कामगारों को यूनियन का काम करने के लए प्रेरित करना शुरू कया और यह बात बम्बई व शोलापुर की सूती मलों की एटक की यूनियनों में औरतों की हिस्सेदारी से देखी जा सकती है। कम्युनिस्टों ने सर्वप्रथम महिलाओं के अपने संगठन बनाए जैसे क बंगाल में महिला आत्मरक्षा स मति , आन्ध्र महिला संघ और पंजाब वुमैन सेल्फ डफेंस लीग- ये सारी की सारी संस्थाओं ने जन-कार्यों में लगीं औरतों और छात्राओं को लामबंद कया। इनकी सदस्य संख्या पहले 3,000 फर 20,000 फर 1944 तक 43,000 तक पहुँच चुकी थी। यद्य प बाद में इन संस्थाओं ने सांप्रदायिकता , अकाल के समय जमाखोरी और बढ़ती कीमतों के खलाफ संघर्ष कए। हिन्दू कोड बिल के प्रचार के दौरान केवल कम्युनिस्टों ने ही महिला-पुरुषों के प्रदर्शन इस बिल के समर्थन में कए ता क रूढ़िवादी वरो धयों का मुकाबला कया जा सके।

कम्युनिस्टों ने औरतों को तेलंगाना व तेभागा, केरल के पुनाप्रावायलार वद्रोह में सीधे लड़ाकू गति व धयों में शा मल कया। तेलंगाना व तेभागा आंदोलन में औरतें वास्तव में सशस्त्र गति व धयों में शा मल थीं। तेभागा आंदोलन के अंतिम चरण में जब कसान सभा के कार्यकर्ताओं को भू मगत होना पड़ा और पुरुषों को गाँव छोड़-छाड़ भागना पड़ा तो औरतों ने ही उस समय मोर्चा संभाला। अपने गाँव व खेतों की रक्षा के लए हिन्दू, मुस्लिम, द लत व आदिवासी

औरतों ने खुद अपनी म ल शया नारी वाहिनियाँ बनाई। तेलंगाना में महिलाओं को सशस्त्रा दलों का सदस्य बनाया गया। बहुत सी महिलाएँ दलों में शा मल होना चाहती थीं।महिलाओं के लए

कानूनी सुधार आंदोलनों को छोड़कर कम्युनिस्टों ने कभी भी वस्तृत रूप में औरतों के मुद्दों को नहीं लया। महिलाओं ने खुद , शराब पीकर पत्नियों को पीटने वाले पतियों के खलाफ कार्रवाई की मांग की। भाकपा के दस्तावेज में भी औरतों के उत्पीड़न की तरफ बहुत कम ध्यान दिया गया है। कम्युनिस्टों ने महिला कामगारों को केवल बड़े वर्गीय मुद्दों पर जोड़ा और तब भी उनका नजरिया पुरुषवादी था- ''हम कामगार औरत को एक कामगार की तरह देखते हैं, एक औरत की तरह नहीं।' इसका परिणाम यह हुआ है क औरत केवल दोयम दर्जे की कामगार बनी रही और यौन आधार पर मेहनत के बँटवारे में औरत केवल पत्नी और माँ के रूप में देखी जाती रही। संपत्ति के अ धकार के लए यद्य प कम्युनिस्ट औरत के उत्तरा धकार के लए कानूनी परिवर्तन का समर्थन कर रहे थे फर भी भाकपा के नेतृत्व में हुए भू म संघर्षों में औरत को भू म देने का मुद्दा कभी नहीं उठा। ज़मींदारों से छीनी गयी जमीन सदैव भू महीन कसान परिवारों के पुरुष मु खया के नाम पर ही बाँटी गई।

समकालीन आंदोलन

नारी आंदोलन मृतप्रायः हो गए। इसके कई कारण हैंः

1. व भन्न राजनीतिक व सामाजिक आंदोलन भी खत्म हो गए। तेलंगाना व्रदोह के बाद कांग्रेस से भाकपा तक सभी राजनीतिक पार्टियाँ वोट की राजनीति में उलझ गई। जिन औरतों को पहले के आंदोलनों में लामबंद कया गया था, वे वा पस घरों में चूल्हे-चौके पर चली गईं। केवल कुछ अपवाद मात्रा ही इस राजनीतिक व्यवस्था में बची।

2. नेहरू सरकार ने समाज की भलाई के लए नीतियों की घोषणा की और राजसत्ता सामाजिक सुधारों की एजेंसी के रूप में दिखाई गई। न्यायपा लका ने (काफी देरी और हिच कचाहट के साथ) हिन्दू औरतों को संपत्ति , उत्तरा धकार, शादी, तलाक जैसे मुद्दों पर कुछ अ धकार देते हुए यह दिखाने की को शश की क नारी मुक्ति के लए कानूनी बदलाव ही मुख्य रास्ता है। इसके अतरिक्त स क्रय महिलाओं को सरकारी संस्थाओं में नियुक्त कर दिया गया।

समकालीन नारी आंदोलन उस जबर्दस्त सामाजिक राजनीतिक हलचलों से पैदा हुआ जिन्होंने 1960 के अंत व 70 के दशक के शुरू में भारत को हिलाकर रख दिया। अकाल, महंगाई, बढ़ता भ्रष्टाचार, चुनावी राजनीति में अस्थिरता और तीव्र होते सामाजिक अंत र्वरोधों ने स्वतः स्फूर्त व्रदोहों व संघर्षों को जन्म दिया। नक्सलबाड़ी आंदोलन ने सामंतवाद वरोधी आंदोलन को एक क्रान्तिकारी उभार दिया और बड़ी संख्या में महिलाओं सहित छात्रों व नौजवानों को आक र्षत कया। इस क्रान्तिकारी उभार ने औरतों को पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर राजनीतिक गति व धयों में शा मल होने के लए प्रेरित कया। जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रेरित छात्रा आंदोलन ने बड़ी संख्या में छात्राओं को लामबंद कया जिन्होंने साहसपूर्वक सामाजिक बंधनों का मुकाबला कया। महंगाई के वरोध में हुए आंदोलनों ने

पहली बार शहरी महिलाओं को स क्रय कर उन्हें सड़कांे पर उतारा गया। महाराष्ट्र में लम्बे समय तक पड़े सूखे में हजारों कसान औरतें अकाल राहत कार्यों में लगीं और बराबर मज़दूरी व काम के लए आंदो लत हुईं।

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी पड़ा। पश्चिमी जगत के मुक्ति आंदोलनों ने शहरी पढ़ी- लखी औरतों में नई चेतना का वकास कया। इस आंदोलन के दबाव के कारण संयुक्त राष्ट्रसंघ को 70 का दशक अन्तर्राष्ट्रीय महिला दशक के रूप में मनाना पड़ा। इससे वश्व भर की महिलाओं की दयनीय स्थिति पर ध्यान केन्द्रित हुआ। औरतों पर उद्योगीकीकरण के कारण हुए नकारात्मक प्रभावों का प्रतिबिम्ब ईशर बोसर्ग के महत्वपूर्ण शोध कार्यों में मलता है। ऐसे हालतों में 1975 में स्टेट्स आफ वुमेन कमेटी द्वारा जारी रिपोर्ट ने 1947 के बाद से लगातार औरत की गरती स्थिति पर बड़ी दुखद सच्चाई बयान की है।

आपातकाल के बाद के जनवादी अ धकारों के लए हुए आंदोलनों ने महिलाओं के मुद्दों को और बड़ा आधार दिया। औरतों की स्थिति व उत्पीड़न के प्रश्न पर चर्चा करने के लए भारत के मुख्य शहरों में अनौपचारिक नारी समूह बने जो सैद्धान्तिक व आंदोलनकारी दोनों पहलुओं पर ध्यान रखते थे। बहुत सी महिलाओं के वचार माओवादी या ट्राटस्कीवादी थे और वे भारत के उत्पीड़न के स्रोत परिवार की प्रकृति, औरत के ऊपर वकास का प्रभाव जैसे मुद्दों के वश्लेषण पर गंभीर थीं। इनके बहुत से समूहों ने झोपड़ प ी की औरतों, कामगार औरतों, छात्राओं के बीच भी काम कया। इनमें सबसे पहला समूह 1974 में हैदराबाद में नक्सलबाड़ी आंदोलन से प्रभा वत होकर मध्यमवर्गीय महिलाओं द्वारा प्रोग्रे सव ऑर्गेनाइजेशन आफ वुमैन (पी.ओ.यू.) बनाया गया।

आपातकाल के बाद जनवादी अ धकारों के लए हुए आंदोलनों ने महिलाओं के मुद्दों को और बड़ा आधार दिया। व भन्न ग्रामीण संघर्षों ने औरत के अ धकारों के प्रश्न को खड़ा कया। जमींदारों के खलाफ भोजपुर के कसान संघर्ष में ज़मींदारों द्वारा कसान महिलाओं से बलात्कार जैसे मुद्दे को उठाया गया। बोधगया संघर्ष ने औरत के नाम जमीन के पंजीकरण के प्रश्न को उठाया। जमींदारों के खलाफ लामबंद हुई आदिवासी औरतों ने शराब के खलाफ आंदोलन कया। इस प्रकार गाँव व शहरों में महिलाओं से जुड़े मुद्दे प्रकाश में आए। मथुरा-बलात्कार मामले पर कोर्ट के फैसले पर और इसके खलाफ हुए आंदोलनों ने नारी आंदोलन को शहरी इलाकों में और आगे बढ़ाया। इस बलात्कार वरोधी आंदोलन के कारण केवल बड़े शहरों में ही महिला संगठन नहीं बने बल्कि छोटे शहरों व कस्बों में भी महिला संगठनों की स्थापना हुई। यद्य प इस आंदोलन को प्रभा वत करने वाली महिलाएँ क्रान्तिकारी राजनीतिक वचारों से ओतप्रोत थीं ले कन यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त था। कोई भी राजनीतिक दल इसका नेतृत्व करने में या पहलकदमी करने में सक्षम नहीं था। भाकपा और माकपा अपनी संशोधनवादी राजनीति , सो वयत सामाजिक साम्राज्यवाद से मलीभगत और स्थानीय क र्मयों के कारण उस दशक में कसी भी जनसंघर्ष को उठाने में आगे नहीं रही। चारु नेतृत्व में बनी भाकपा (मा.ले) भी जबर्दस्त सरकारी दमन और बिखराव के कारण राजनीतिक या संगठनात्मक रूप से इस स्थिति में नहीं थी क महिला आंदोलन पर पहलकदमी कर सके।

मथुरा बलात्कार मामले पर आंदोलन 1980 में शुरू हुआ और इससे बलात्कार संबंधी कानून के संशोधन के लए भू मका तैयार हुई। शुरू में यह आंदोलन सत्ता के खलाफ था। पु लस द्वारा कए अनेक बलात्कार लोगों की जानकारी में लाए गए, जैसे माया त्यागी, रमीजा बी केस आदि। इस संघर्ष ने यौन हिंसा को एक सामाजिक मुद्दा बना दिया और इस पर एक समझ पैदा करने में मदद दी। यह स्पष्ट कर दिया गया क बलात्कार मात्रा कामवासना या अनैतिकता का प्रश्न नहीं है बल्कि यह औरत के खलाफ ताकत का इस्तेमाल है। इसे उत्पीड़न के रूप में देखा जाना चाहिए। 1981 तक दहेज के कारण होने वाली मौतें मुख्य मुद्दा बनीं जिसका कारण उन परिवारों के वरूद्ध प्रचार था जिन घरों में महिलाएँ जिंदा जला दी गई थीं। इसके परिणामस्वरूप परिवार के अन्दर होने वाली हिंसा व शोषण पर ध्यान केन्द्रित हुआ। संपत्ति को लेकर महिलाओं के अ धकारों, व भन्न पर्सनल कानूनों के तहत महिलाओं के साथ होने वाले अन्यायों का वश्लेषण और आलोचना की गई। चूँ क व भन्न संगठन मध्यम वर्गीय व शहरी थे अतः इस मुहिम व वश्लेषणों को मी डया से काफी प्रचार मला। इस प्रचार का प्रभाव कहीं ज़्यादा हुआ ले कन औरतें उतनी लामबंद न हो पाईं। इन संगठनों ने नारी आंदोलनों के रूप में पहचान बनाई जिन्हें राजनीतिक पार्टियों व पुरुषों से स्वतंत्रा रखने पर जोर दिया गया। अक्टूबर 1980 में बम्बई में स्वायत्त महिला संगठनों की ओर से एक सम्मेलन कया गया।

1982 के बाद व भन्न क्षेत्रों व जनसंगठनों में महिलाओं के संगठित होने की प्र क्रया को स्पष्ट महसूस कया जा सकता है। बीड़ी मज़दूर, घरेलू कार्य में लगे झोपड़प ी में रहने वाले लोग बड़ी संख्या में अपनी-अपनी माँगों को लेकर सड़कों पर उतर आए। कामगार औरतों की एक राष्ट्रीय समन्वय स मति स्था पत हुई। जिसने सार्वजनिक क्षेत्रा में काम कर रही औरतों को इक ा कया। इस स मति की दो बैठकें हो चुकी हैं जिनमें काम करने के स्थान पर औरतों के साथ होने वाली समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित कया गया। सीटू इस स मति के वकास में पहलकदमी कर रहा था। स्वायत्त नारी आंदोलन के प्रभाव में व भन्न राजनीतिक पार्टियों ने महिला मोर्चे बनाए। जनता दल , एस.एस.पी. और व भन्न द लत दलों ने अपने राजनीतिक दिशा के समर्थन में महिलाओं को लामबंद करने के लए महिला जन संगठनों को फर से स क्रय कया है। अन्य कामों के साथ-साथ मुस्लिम औरतों से संबं धत प्रोटेक्शन बिल के खलाफ माकपा ने एक मोर्चा संगठित कया। समस्त भारत में अनेक महिला संगठन , स्वतंत्रा, तो कुछ संशोधनवादी पार्टियों के बाहर, वामपंथ और क्रान्तिकारी वचारधारा को समर्थन देते हुए कस्बों व शहरों में बने हैं।

कई महिला संगठनों ने इसी समय वपत्ति में पड़ी महिलाओं की सहायता के लए संस्थाएँ बनानी शुरू की। इन सहायता संस्थाओं के अभाव में दहेज के कारण मौत के केस , बलात्कार के केस व परिवार में होने वाली हिंसा के केस अब तक अनदेखे रह जाते थे। सरकारी वत्तीय सहायता या वदेशी सहायता से सलाह केन्द्र व आत्मनिर्भरता के लए केन्द्रों की स्थिति व उत्पीड़न को लेकर शोधकार्यों में लग गए। इतिहास को नारीवादी दृष्टिकोण से देखने की को शश की गई, नारी संघर्षों का इतिहास व सामाजिक संघर्षों में नारी की भू मका खोजी जाने लगी। 1986 के बाद से ग्रामीण महिलाओं में भी जागृति दिखाई देती है। कसान संगठनों ने चाहे उनका नेतृत्व धनी कसान कर रहे हों या क्रान्तिकारी ताकतं े , महिलाओं के मुद्दे उठाए और महिला संगठनों की स्थापना की। 1980 में चंदावा में शेतकरी संगठन के नेतृत्व में 20,000 कसान औरतों का लामबंद होना और शेतकारी महिला अगाड़ी की स्थापना इस बात की सूचक है। टिकैत के नेतृत्त्व में भारतीय कसान यूनियन ने अपने सबसे मज़बूत दिनों (1989-90) में औरतों से संबं धत वशेष मुद्दे (जैसे दहेज) उठाए। इसी प्रकार मार्क्सवादी-लेनिनवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में

बिहार और आन्ध्र प्रदेश में कसानों और खेतिहर मज़दूरों के संगठनों ने भी महिला मोर्चे की स्थापना की। पछले दो वर्षों में भाकपा (माले) ने पीपुल्स वॉर नेतृत्व में आदिलाबाद और गढ़ चरोली जिलों में पारंपरिक रूढ़ियों के .खलाफ़, जो औरत को दूसरा दर्जा देती है , और पु लस दमन के .खलाफ़ आदिवासी औरतों ने सम्मेलन आयोजित कए हैं। आंध्र प्रदेश की ग्रामीण महिलाओं द्वारा वस्तृत स्वतः स्फूर्त शराबबन्दी का आंदोलन ग्रामीण महिलाओं की ताकत को दिखाता है जो सुप्तावस्था से धीरे-धीरे जाग रही है।

राजसत्ता का स्वरूप

भारतीय शासकवर्ग ने नारी आंदोलन से सरोकार इसे सहयोजित करने की ख़ातिर , ख़त्म और दमन करने खातिर रखा है। नारी आंदोलनों की बदौलत जन्मी चेतना की वजह से , वशेषरूप से श क्षत मध्यवर्गीय महिलाओं ने उन व्यवसायों, शासकीय एवं प्रबंधन पदों पर प्रवेश कया , जो अभी तक पुरुषों के कब्ज़े में थे। इन वर्गों की नारियाँ स्वायत नारी आंदोलनों में अग्रणी रही हैं। इसकी महत्ता पहचानते हुए शासकवर्ग नारियों में कैरियर निर्माण को प्रोत्साहन करने का काम , अपने प्रचार (माध्यमों) से करता रहा है। इस तरह वे श क्षत मध्यमवर्गीय नारियों की कुंठित आकांक्षाओं को संतुष्ट करने की को शश करते हैं और इस तरह नारी आंदोलनों में बराबरी के प्रश्न को इस पूँजीवादी व्यवस्था में बराबरी तक सी मत कर देते हैं। फलस्वरूप ये नारी आंदोलनों को इस शोषक व्यवस्था को चुनौती देने से रोक देते हैं। सत्ता पक्ष की प्रति क्रया और ज्यादा महत्वपूर्ण रही है। यह प्रभाव पैदा करने के लए क सत्ता नारी प्रश्नों व स्वायत्त नारी आंदोलनों के अगुआ वर्गों को सहयोजित करने के प्रति सचेत हैं। उन्होंने अनेक कदम उठाए गए हैं। उठाए गए कदमों में ये हैंः

1. महिला आयोग की स्थापना और नेतृत्व में भी नारीवादियों को इस में लेना,

2. नारी पु लस दल संगठित करना और उस में महिला कार्यकर्ताओं को लेना,

3. स्त्राी संबंधी अध्ययन व शोध के काम के लए दिल खोल कर धन देना,

4. नारी समर्थक उद्यमों को राहत एवं सहायता देना जिससे वे सत्ता के नियंत्राण व निगरानी में आ जाएँ

5. नारी संबं धत मुद्दों से ताल्लुक रखने वाले नए कानून बनाना या उनमें संशोधन करना।

नारियों को राजनीतिक ग लयारे में लाने की ख़ातिर उन्होंने पंचायतों , जिला परिषदों व पा लकाओं में उनके लए आरक्षण लागू कया। इस लए वे ऐसी छ व पैदा कर रहे हैं जैसे पैसे वालों व प्रति क्रयावादियों द्वारा कब्जाया यह गैर जनवादी ढाँचा नारी हितों से वास्तव में सरोकार रखता हो। केन्द्र सरकार व कई राज्य सरकारों ने वदेशी एजें सयों से कोष लेकर ग्रामीण महिलाओं के लए कई वकास योजनाएँ शुरू की हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य नारी को शक्षा, ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता देना है ता क वे सरकारी आ र्थक योजनाओं में हिस्सेदारी कर सकें। कर्नाटक और राजस्थान सरकार ने अपनी वकास-योजनाओं में महिला कार्यकर्ताओं व शोधकर्ताओं को मु खया बनाया है। जब क एक तरफ सरकार व शासक वर्ग ने गाँव में वर्ग संबंध बदलने व जातीय दीवार तोड़ने के हर प्रयत्न का दमन कया है, वहीं स्त्राी की छ व हीन व दासी जैसी बनाने में व्यावसायिक फल्मों , टी.वी. धारावाहिकों के जरिए प्रचार माध्यमों का जानबूझ कर इस्तेमाल कया है। न्याय व्यवस्था को स्त्राी- वरोधी बनाकर रखा एवं मज़बूत कया गया। पर अलग-अलग योजनाओं द्वारा अपने को प्रगतिशील छ व देने की को शश में लगे हैं। इसी समय सत्ता ने उन नारियों पर जो कसान आंदोलनों व राष्ट्रीयता आंदोलनों में हिस्सा लेती हैं या उनका समर्थन करती हैं घोर दमन कया है। भारी संख्या में महिलाओं की गरफ़्तारी और उन्हें यातना का शकार बनाया गया है। वे वशेष पु लस बल व अर्द्धसैनिक बलों द्वारा बलात्कार का शकार भी बनी हैं। महिलाओं को फर्जी मुठभेड़ में या यातनाएँ देकर मारा गया है। बलात्कार दमन का एक मुख्य ह थयार उन क्षेत्रों में रहा है जहाँ आंदोलन तेज़ हैं। जैसे कश्मीर, तेलंगाना। महिलाओं को आंदोलन में भाग लेने से रोकने वाली दमन की सरकारी नीति का यह पहलू जनता के सामने नहीं आने दिया गया। सरकार ने साम्राज्यवादियों के लए अर्थव्यवस्था के दरवाजे खोल दिए हैं और वह भारी अंतरिम ऋण, जटिल तकनीक एवं निजीकरण पर आधारित वकास रणनीति में कूद पड़ी है। यह नीति एका धकारी पूँजीपति एवं अंतर्राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग के बहुत अनुकूल है एवं उसका अर्थ है शहरी और ग्रामीण जनता की बर्बादी और गरीबी। इस नीति का परिणाम मंहगाई के रूप में पहले ही अनुभव कया जा रहा है। इसी लए सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष व वश्व बैंक के निर्देश पर कुछ वशेष समूहों ख़ासकर गरीब महिलाओं को राहत देने की योजनाएँ चालू की हैं। यह साफ तौर पर उस रोष को ख़त्म करने के लए है जिसे आ र्थक नीति पैदा कर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजित यह रणनीति , जिसे भारतीय सत्ता ने अपनाया है , महिलाओं के सवालों को कस तरह ठंडे बस्ते में डाल रहा है, यह एन.जी.ओ. के कार्य वश्लेषण से समझा जा सकता है। भारत में नारी आंदोलन के वकास एवं राज्य के रुख के इस सं क्षप्त ववरण के बाद आइए समकालीन नारी आंदोलन में व भन्न झुकावों पर एक नज़र डालें। ये झुकाव काम करने के यथा र्थवादी ढंग और वर्ग संघर्ष व सत्ता से अपने संबंधों के आधार पर दृष्टिगोचर होते हैं। कई नारी-संगठन गैर राजनीतिक होने का बखान करते हैं पर राजनीतिक वचारधारा हर नारी संगठन में देखी जा सकती है। इस लए हम व भन्न झुकावों तथा उस में निहित राजनीतिक वचारधाराओं का वश्लेषण करेंगे।

प्रति क्रयावादी प्रवृत्ति

हिन्दू क रवाद एक स्पष्ट प्रति क्रयावादी धारा है, जिसने पछले दशक में महिलाओं को लामबंद करना शुरू कया है, जिसका नेतृत्व भाजपा करती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मातहत महिला शाखा , राष्ट्रीय से वका काफी वर्षों से काम कर रही है। फर भी नारी मुक्ति आंदोलनों के प्रभाव के बावजूद यह महिलाओं को आंदोलनों में नहीं ला पाया था। वे उच्च मध्यम वर्गीय , उच्च जातीय महिलाओं को अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लए हिन्दू राष्ट्रवाद के नारे केे तहत इक ा करने में सफल रहे। उनकी सफलता अयोध्या में कारसेवकों में व कराया वृ द्ध के खलाफ संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी से ज़ाहिर है।

दुर्गावाहिनी की स्थापना उनका नया प्रयत्न है। जहाँ महिलाओं को हिन्दू उद्देश्यों की रक्षा करने के लए प्र श क्षत कया जाता है। दुर्गावाहिनी सेवा, संस्कृति और संस्कार के सद्धांतों पर आधारित बताई जाती है। अपने आप में इस सद्धांत में पतृसत्तात्मक मत निहित है क नारियों को यह भ्ूा मका अदा करनी चाहिए। राजनीतिक मंच पर महिलाओं को इक ा कर लेने के बावजूद इस झुकाव का दर्शन महिलाओं को परम्परागत गृहकार्य में सी मत रखने के बात का समर्थन करता है। यह ब्राम्हणवादी संस्कारों को मज़बूत करता है। संघ और भाजपा की नेत्राी वजयाराजे सं धया के बयान से यह स्पष्ट रूप से सामने आ गया , जब उन्होंने साफ शब्दों में सती का समर्थन कया। जनवादी नारी मुक्ति आंदोलनों के वकास के लए इस प्रति क्रयावादी झुकाव का सीधे जड़-मूल से ख़ात्मा करना होगा।

संशोधनवादी प्रवृत्ति

1940 तथा 1950 के शुरुआती दौर की कम्युनिस्ट परम्परा के संघर्षों से , जिन में सैकड़ों महिलाओं खासकर कसान महिलाओं को लामबंद कया गया था , उसका फायदा उठाते हुए संशोधनवादी पार्टियों ने कामगार महिलाओं के एक हिस्से से अपना जनाधार बनाया, जो अब भी उनके साथ हैं। टेªड यूनियन आंदोलन का इस में वशेष योगदान रहा। पर भाकपा की राजनीतिक दिशा जो पूँजीवादी शासक वर्ग को प्रगतिशील और साम्राज्यवाद-वरोधी मानती थी , महिलाओं में काम करने के उनके दृष्टिकोण को नेहरू सरकार द्वारा नारी कल्याण के लए चलाई जा रही गति व धयों के दायरे तक सी मत कर दिया गया। स्वायत्त नारी आंदोलनों से प्रभा वत होकर , संशोधनवादी पार्टियों ने अपने महिला मोर्चों को फर से स क्रय कया है और दहेज , बलात्कार, पति द्वारा पत्नी को छोड़ना व मुस्लिम महिला बिल का वरोध करना आदि मुद्दे लये हैं। आश्रय स्थलों की स्थापना करना , सलाई सखाना व औरतों के लए कुछ लघु उद्योगों की स्थापना करना आदि जैसी कार्रवाईयाँ भी उन्होंने की हैं।इन पार्टियों की जो संशोधनवादी राजनीतिक व वैचारिक दिशा है, उसका प्रभाव नारी आंदोलन के प्रति उनके दृष्टिकोण पर भी पड़ा है। मार्क्सवाद के उन्होंने अंधवादी मतलब निकाल कर जो दिशा अपनाई है, उसके अनुसार समाजवाद आने से नारी-मुक्ति अपने आप ही आ जाएगी। आधार व ऊपरी ढाँचे के बीच संबंधों के इस यांत्रिक अर्थ या समझ से वास्तव में निष्क्रियता को बढ़ावा मलता है व यह तात्का लक वैचारिक तथा व्यवहारिक संघर्षों की कीमत कम आँकता है तथा नए उठने वाले मुद्दों को एक नए ढंग से सामना करने से रोकता है। इसके कारण पूँजीवादी नारीवादी प्रवृत्ति को भी जगह मल जाती है। इसके अलावा संशोधनवादियों ने कभी भी सामंतवाद को आ र्थक या सांस्कृतिक क्षेत्रा में संघर्ष या हमले का निशाना नहीं बनाया है। उन्होंने भारत में महिलाओं को पी ड़त करने के यंत्रों पर कोई ठोस समझ नहीं दी है। यह बात जाहिर हो जाती है जब वे परिवार रूपी संस्था को छूने में या जनवाद के लए संघर्ष करने व यौन के

आधार पर काम करने के परंपरागत वभाजन को अपनी पार्टियों के भीतर चुनौती देने में वे लोगों को लामबंद करने में अनिच्छा दिखाते हैं।

माकपा व इसके महिला मोर्चे ने पश्चिमी बंगाल में बढ़ते बलात्कारों के मुद्दे पर तथा एक वरोधी संगठन की महिला से अपने पार्टी कार्यकत्ताओं द्वारा बलात्कार के मुद्दे पर जो कार्यवाहियाँ की हैं व जो वचार व्यक्त कये हैं उससे माकपा कस हद तक पतृसत्तात्मक वचारधारा व सांगठनिक मौकापरस्ती का शकार है , उसका दहला देने वाला जीता जागता उदाहरण है। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने न केवल मुद्दे के प्रति लापरवाही दिखाई बल्कि अपने कैडर के पतृसत्तात्मक महिला वरोधी रवैये को भी बनाए रखा है। इससे बुरी बात तो यह है क धानू के बलात्कार के केस में जिन कार्यकर्ताओं को दोषी ठहराया गया था , उन्हें भी बचाया गया व राजनीतिक व सामाजिक सद्धांत से ऊपर तात्का लक सांगठनिक फायदे को रखा गया। भाकपा और माकपा के महिला संगठन आ र्थक सहायता के माध्यम से व सरकार द्वारा चलाई गई गति व धयों से सहयोग के जरिए राजसत्ता (सरकार) के साथ जुड़े हुए हैं। स्वायत्त महिला आंदोलन की वघटनकारी नीति की आलोचना इस लए नहीं की जाती है क वे सरकार से जुड़ी हुई हैं, बल्कि इस लए की जाती है क वे संसदीय राजनीतिक दलों से स्वतंत्रा हैं। पार्टियों के बीच नारी आंदोलन के ऊपर एका धकार के लए, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय कई मंचों पर नारी आंदोलन का प्रतिनि धत्व करने के लए व महिलाओं को अपनी राजनीतिक दिशा पर लामबंद करने के लए संघर्ष चलता रहता है। मौजूदा संसदीय प्रणाली के दायरे में काम करते हुए संशोधनवादी पार्टियों ने महिलाओं को अपनी राजनीतिक दिशा पर एक हद तक लामबंद कया है। जैसे शांति व बढ़ती मंहगाई के मुद्दों पर। मगर मौजूदा राजनीतिक ढाँचे में एक वरोधी गुट बने रहने की सहू लयत को बनाए रखते हुए व क्रान्तिकारी उद्देश्य को छोड़ देने के कारण उनमें न केवल शोषण करने वाले अर्द्ध-सामंती , अर्द्ध-उपनिवेशी ढाँचे को उखाड़ फेंकने वाली क्रान्तिकारी ताकत की कमी है बल्कि उन्होंने अपनी वोट की राजनीति की आवश्यकता के अनुसार नारियों की जरूरत को भी इसके अधीन कर दिया है।